अध्याय – 7
विविध प्रकार के लेखन

उद्देश्य–

इस अध्याय का उद्देश्य जनसंचार माध्यमों के विविध प्रकार के लेखन से अवगत कराना है जिसमें समाचार पत्र–पत्रिकाओं के लिए समाचारों के अलावा फीचर लेखन भी महत्वपूर्ण कार्य है। विविध ज्वलंत विषयों पर वैचारिक मंथन के लिए पाठकों के समक्ष एक विचार के रूप में प्रस्तुत सम्पादकीय लेखन। समाचार पत्र में प्रकाशित किसी अंश अथवा समाचार को लेकर किसी पाठक की ओर से व्यक्त की गई प्रतिक्रिया तथा किसी विषय विशेष के प्रति पाठकों के ध्यानाकर्षण हेतु लिखा गया पाठक सम्पादक के नाम पत्र की लेखन विधा से परिचय कराना है । हालांकि लेखन के और भी कई स्वरूप हैं लेकिन उनमें से कतिपय आवश्यक घटकों के बारे में आधारभूत जानकारी देना है।

7.1 फीचर लेखन

फीचर लेखन अर्थात् शब्दों द्वारा चित्रांकन याने शब्द–चित्र। भाव और भाषा के मिश्रित लेखन प्रस्तुति को शैली कहते हैं। यदि यह शैली मानवीय भावनाओं और उनकी अभिरुचि के अनुरूप मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत की जाए तो उसे हम फीचर कह सकते हैं। एक सर्वमान्य परिभाषा के अनुसार एक परिभाषा के अनुसार ''रोचक विषय का मनोरम और विशद प्रस्तुतीकरण ही फीचर है। इसमें दैनिक समाचार, सामयिक विषय और बहुसंख्यक पाठकों की रुचि वाले विषय की चर्चा होती है। इसका लक्ष्य मनोरंजन करना, सूचना देना और जानकारी को जन उपयोगी ढंग से प्रस्तुत करना है।''

फीचर लेखक घटना या विषय की जानकारी के अतिरिक्त अपनी प्रतिक्रिया अथवा विचारों से भी पाठक को अवगत कराता है और इस तरह पाठक की कल्पनाशक्ति और उसकी मनःस्थिति को भी प्रभावित करता है। फीचर में कथा तत्त्व की प्रधानता रहती है याने उसके लेखन या प्रस्तुति में सरलता और प्रवाह दोनों ही होते हैं। सामान्य शब्दों में कहें तो समाचार का काम तथ्य और विचार देकर खत्म हो जाता है। जबकि फीचर का काम इससे आगे का होता है। यह समाचार की पृष्ठभूमि का खुलासा करते हैं, विषय या घटना के जन्म और विकास का विवरण देते हैं। फीचर का महत्व इसी बात में है कि यह कब, क्यों, कैसे, कहाँ और किस को स्पष्ट करने वाले समाचार से आगे जाकर तथ्य कल्पना और विचार की संतुलित प्रस्तुति के जरिए अपना एक विशेष प्रभाव छोड़ता है। यह विषय अथवा घटना का पूरा खुलासा भी करते हैं और पाठक को कुछ सोचने के लिए भी विवश करते हैं।

7.2 फीचर के प्रकार :

फीचर पत्रकारिता की एक बहुत ही विस्तृत विधा है। विषयों की विविधता और विस्तार को देखते हुए फीचर को निम्नलिखित प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. समाचार फीचर : ऐसे फीचर जिनका सम्बन्ध सीधे ही किसी समाचार से होता है, उसे समाचार फीचर कहा जाता है । आज अधिसंख्य फीचर समाचार आधारित होते हैं इसमें लेखक प्रस्तावना में ही मूल समस्या का उल्लेख कलात्मक और कथात्मक ढंग से आरंभ करता है। दैनिक समाचार पत्रों के साथ–साथ पत्रिकाओं के लिए भी इस तरह के फीचर आज की जरूरत बन चुके हैं।

2. मानवीय रुचिपरक फीचर : ऐसा माना जाता है कि मानवीय रुचियाँ एक समान नहीं होती हैं। सामूहिक रूप किसी समुदाय या समाज की सामन्यतः रुचियों और व्यवहार में समानता के कतिपय बिन्दु निर्धारित कर लिए जाते हैं । इन्हीं को आधार मानकर मानवीय अभिरुचियों के विभिन्न पहलुओं पर लिखे गए फीचर मानवीय रुचिपरक फीचर कहलाते हैं।

3. व्याख्यात्मक फीचर : कभी–कभी समाचार पत्रों के लिए प्रेषित समाचार ऐसे भी होते हैं जिनमें घटना अथवा तथ्यों की व्याख्या आवश्यक महसूस होती है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थितियों की तथा विविध समस्याओं की भावनात्मक दृष्टि से विवेचना करते हैं, ऐसे फीचर व्याख्यात्मक फीचर कहलाते हैं।

4. ऐतिहासिक फीचर : इतिहास के बारे में जानने की अभिरुचि मानव स्वभाव है। इसी जिज्ञासा वृत्ति और स्वाभाविक अभिरुचि के लिए तथ्याधारित कथात्मक प्रस्तुतीकरण ऐतिहासिक फीचर की श्रेणी में आते हैं।

5. विज्ञान फीचर : वर्तमान में पत्र–पत्रिकाओं में विज्ञान संबंधी समाचारों और नए आविष्कारों के बारे में जानकारी का प्रकाशन अब अनिवार्य सा हो गया है । विज्ञान की उपलब्धियों, खगोलीय घटनाओं, चिकित्सा जगत की नई खोजों, इंटरनेट व संचार क्रान्ति आदि से जुड़े विषयों आदि पर केन्द्रित फीचर इस श्रेणी में आते हैं। इस श्रेणी के फीचर लेखन के लिए एक विशेष प्रकार की विशेषज्ञता जरूरी समझी जाती है। विज्ञान संबंधी इन सब जानकारियों को नीरस और उबाऊ होने से बचाने के लिए सरस, सरल और सहज भाषा का प्रयोग किया जाता है। यह फीचर की विधा में ही संभव हो पाता है ।

6. खेलकूद फीचर : समाचारपत्रों में खेल के पृष्ठ युवा पीढ़ी के लिए काफी रुचिकर होते हैं। क्रीड़ा समीक्षक श्री विनोद श्रीवास्तव का कथन है कि "खेलकूद का पृष्ठ ही इस बात का प्रमाण है कि दिनचर्या का यह पक्ष समाचारपत्रों के लिए महत्त्वपूर्ण है। किसी राष्ट्रीय पर्व या स्थिति विशेष में

भले ही पाठक की दृष्टि संबंधित समाचारों की ओर अधिक हो किन्तु; खेलकूद के प्रति रुचि व्यापक है। चाहे पाठक खिलाड़ी हो अथवा नहीं।'' अतः समाचारों से इतर खेल संबधी जानकारी को फीचर के स्वरूप प्रस्तुत किया जाता है।

7. पर्वोत्सवी फीचर : भारत विविधताओं का देश है जिसमें विविध परंपराओं का समावेश है। समय समय पर समाज अथवा लोकजीवन में अनेक पर्वों और उत्सवों का आयोजन किया जाता है। कई उत्सव राष्ट्रीय स्तर पर मनाए जाते हैं तो अनेक क्षेत्रीय होते हैं; किन्तु प्रत्येक उत्सव का अपना एक महत्त्व है और उसकी पृष्ठभूमि में कोई कथा अथवा इतिहास भी जुड़ा है। इन्हीं सब को वर्तमान के साथ जोड़कर प्रासंगिक बनाने का कार्य भी फीचर में सहज रूप में किया जा सकता है।

8. विशेष घटनाओं पर आधारित फीचर : युद्ध, बाढ, बम विस्फोट, हवाई दुर्घटना आदि पर आधारित फीचर किसी भी अखबार को विशिष्ट बना देते हैं। इस तरह के फीचर अब इलेक्ट्रानिक माध्यमों में भी खूब लोकप्रिय होने लगे हैं।

9. व्यक्तिपरक फीचर : किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के व्यक्तित्व, कृतित्व या उसकी किसी सामयिक उपलब्धि पर आधारित फीचर इस श्रेणी में आते हैं।

10. खोजपरक अथवा छानबीन पर आधारित फीचर : इस श्रेणी में वे फीचर सम्मिलित हैं जिनके लेखन के लिए विशेष रूप से छानबीन की जाती है। तथ्यों की खोज की जाती है और लोगों से पूछताछ की जाती है।

11. मनोरंजन, फिल्म या सांस्कृतिक कार्यक्रमों से सम्बन्धित फीचर : इस तरह के फीचर भी काफी लोकप्रिय माने जाते हैं क्योंकि ये सभी विषय मनोरंजन से सीधे–साधे जुड़े हैं। फिल्म तो अपने आप में फीचर की ही एक विधा है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों और उत्सवों पर आधारित फीचर भी पाठकों और दर्शकों द्वारा पंसद किए जाते हैं।

12. जनरुचि के विषयों पर आधारित फीचर : इस तरह के फीचर स्थानीय पाठक अथवा दर्शकों की रुचि को देखते हुए लिखे जाते हैं। स्थानीय समस्याओं, महंगाई, सामाजिक विषयों आदि पर केन्द्रित फीचर इस श्रेणी में आते हैं।

13. फोटो फीचर : फीचर एक और लोकप्रिय विधा है फोटो फीचर। इसके तहत एक विषय पर आधारित विविध आयामों के साथ ली गई अनेक तस्वीरों का प्रयोग कर संक्षिप्त में उनका परिचय दे कर संपूर्ण कहानी वर्णित की जा सकती है। वर्तमान में पत्रिकाओं में इस तरह का प्रयोग व्यापक स्तर पर हो रहा है।

14. इलेक्ट्रानिक माध्यमों के फीचर : रेडियो तथा टेलीविजन समाचारों में भी अब फीचर का खूब इस्तेमाल हो रहा है। रेडियो रूपक तो पहले से ही काफी लोकप्रिय थे लेकिन अब टेलीविजन समाचार चैनल भी फीचर का उपयोग करने लग गए हैं। डिस्कवरी और नेशनल जियोग्राफिक्स जैसे चैनलों के फीचर तो किसी भी दर्शक को बांध देते हैं। विषयवस्तु पर आधारित वर्गीकरण के अलावा भी फीचर की अनेक अन्य अनेक श्रेणियाँ है। वर्तमान में ग्राफिक्स आधारित फीचर भी काफी लोकप्रिय हैं। व्यंग्य और हास्य चित्रों पर आधारित रूपक का भी अलग स्वरूप है। तिथियों पर आधारित रूपक भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं होते हैं। प्रसिद्ध व्यक्तियों के जन्मदिन, जयन्ती, प्रमुख राष्ट्रीय और धार्मिक पर्व आदि पर लिखे जाने वाले फीचर इसी श्रेणी में आते हैं।

7.3 फीचर की रचना और लेखन :

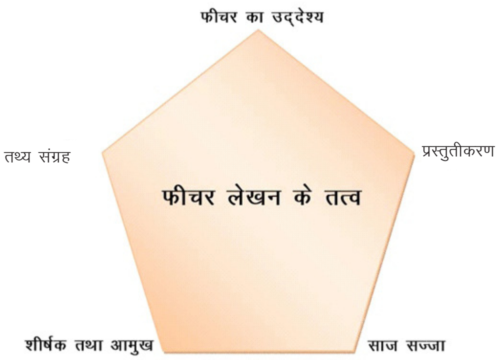

फीचर लेखन पत्रकारिता की एक ऐसी विधा है जिसमें लेखन को किसी खास सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। फीचर रचना का मुख्य नियम यह है कि फीचर आकर्षक, तथ्यात्मक और मनोरंजक होना चाहिए। मोटे तौर पर फीचर–लेखन के लिए 5 मुख्य बातों का ध्यान रखा जाता है।

1. तथ्यों का संग्रह : जिस विषय या घटना पर फीचर लिखा जाना है, उससे जुड़े, तथ्यों को एकत्र करना सबसे जरूरी काम है। जितनी अधिक जानकारी होगी, फीचर उतना ही उपयोगी और रोचक बनेगा। तथ्यों के संग्रह में इस बात का भी खास ध्यान रखा जाना चाहिए कि तथ्य मूल स्रोत से जुटाए जाएँ और वह एकदम सही हों।

2. फीचर का उद्देश्य : फीचर लेखन का दूसरा महत्त्वपूर्ण बिन्दु फीचर के उद्देश्य का निर्धारण है। किसी घटना या विषय पर लिखे जाने वाले फीचर का उद्देश्य तय किए बिना फीचर लेखन स्पष्ट नहीं हो सकता।

3. प्रस्तुतीकरण : फीचर लेखन का यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पक्ष है। फीचर लेखन में इस बात का खास ध्यान रखा जाना चाहिए कि फीचर मनोरंजक हो। उसे सरस और सरल भाषा में सहज ढंग से प्रस्तुत किया जाए।

4. शीर्षक तथा आमुख : किसी अच्छे समाचार की तरह ही अच्छे फीचर का शीर्षक और आमुख भी उपयुक्त ढंग से लिखा जाना चाहिए। अच्छे फीचर की विशेषता यह होनी चाहिए कि वह पाठक को आकृष्ट भी कर ले, पाठक में विषय के प्रति जिज्ञासा भी पैदा करे और सार्थक भी हो।

5. साज–सज्जा : लेखन तब तक पूरा नहीं होता जब तक उसकी पर्याप्त साज–सज्जा की तैयारी पूरी न हो जाए। फीचर के साथ इस्तेमाल होने वाले चित्रों, रेखाचित्रों और ग्राफिक्स का चयन भी फीचर रचना का एक जरूरी पहलू है।

7.4 फीचर और लेख में अन्तर :

पत्रकारिता में समाचारों के बाद लेख और फीचर का स्थान है। लेख और फीचर दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं लेकिन दोनों का प्रभाव अलग–अलग होता है। फीचर पाठकों की रुचि के अनुरूप, किसी घटना या विषय की तथ्यपूर्ण रोचक प्रस्तुति है और गहन अध्ययन पर आधारित गम्भीर प्रमाणित लेखन, लेख की श्रेणी में आता है। फीचर दिल को प्रभावित करता है जबकि लेख दिमाग को। फीचर एक प्रकार का गद्यगीत है जबकि लेख गम्भीर व उच्च स्तर की बहुआयामी गद्य रचना। फीचर किसी घटना या विषय के कुछ आयामों को छूता है तो लेख उस घटना के हर एक पहलू को स्पर्श करता है, प्रस्तुत

करता है।

पत्रकार पी०डी०टण्डन के अनुसार ''किताबें पढ़कर, आँकड़े जमा कर के लेख लिखा जा सकता है, लेकिन फीचर लिखने के लिए लेखक को अपनी आँख, कान, भावों अनुभूतियों, मनोवेगों और अन्वेषण का सहारा भी लेना पड़ता है। लेख लम्बा, गम्भीर, हर व्यक्ति की रुचि के अनुकूल न होते हुए भी प्रशंसनीय हो सकता है, लेकिन ये बातें फीचर के लिए जानलेवा हैं। फीचर को रोचक, दिलचस्प और सबकी रुचि के अनुकूल होना ही होता है।''

लेख सामान्यतः किसी विशेष समस्या पर उसके किसी विशेष पहलू का सूक्ष्म और गहन अध्ययन होता है। विषय की पृष्ठभूमि के अध्ययन से लेख तो तैयार किया जा सकता है लेकिन फीचर नहीं। लेख और फीचर दोनों की ही शैली भी भिन्न–भिन्न होती है। लेख में लेखक को उपलब्ध आधार सामग्री के अनुसार गम्भीरतापूर्वक चीजें प्रस्तुत करनी होती हैं, मगर फीचर लेखक को जीवन और जीवन की समस्याओं पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने की भी छूट होती है ।

7.5 श्रव्य दृश्य माध्यमों के लिए फीचर लेखन :

रेडियो फीचर और टेलीविजन फीचर, वैसे तो मुद्रित माध्यमों के फीचर की तरह ही होते हैं लेकिन रेडियो और टीवी के फीचर दोनों के लिखने के तरीके में काफी भिन्नता है।

रेडियो फीचर वह फीचर है जो रेडियो के श्रोताओं को खबरों से आगे की जानकारी प्रदान करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। इस फीचर को श्रोता न तो देख सकते और न ही पढ़ सकते हैं । लेकिन रेडियो फीचर की सबसे बड़ी खूबी यह है कि शब्दों को न पढ़ सकने वाला तबका भी इसका आनन्द ले सकता है। पत्र–पत्रिकाओं के फीचर की भाँति रेडियो रूपक में कल्पनाशीलता, तथ्य, घटना अथवा विषय का विवरण, विवेचन, लोगों के विचार, प्रतिक्रियाएँ और रोचकता तो होती है, इसमें संगीत और ध्वनियों का अतिरिक्त प्रभाव भी होता है।

टेलीविजन फीचर की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें शब्द भी होते हैं और चित्र भी। संगीत भी होता है और ध्वनियाँ भी। इसकी सजीवता, गति और दृश्यात्मकता इसे फीचर की हर विधा से अलग और विशिष्ट बनाती है। टेलीविजन फीचर दर्शक को इस लिए भी बाँध कर रखता है कि दर्शक देख कर, सुन कर और महसूस कर के इसका आनन्द ले सकता है।

7.6 संपादकीय लेखन

किसी भी समाचारपत्र के लिए सम्पादकीय पृष्ठ इतना महत्त्वपूर्ण होता है कि उसकी सामान्यतः उपेक्षा नहीं की जा सकती। दैनिक जीवन में अनेक ऐसे मुद्दे होते हैं जिन्हें आम पाठक के लिए समझ पाना मुश्किल होता है और कई बार उन्हें समाचार के रूप में प्रस्तुत करना मुश्किल प्रतीत होता है। ऐसी स्थिति में समाचारपत्र के सम्पादक के लिए आवश्यक होता है कि वह समस्या अथवा उस मुद्दे को विस्तार से समझाने का प्रयत्न करे। ऐसे लेख प्रायः गम्भीर चिन्तन और मुद्दे पर अपना रुख दर्शाने का प्रयास करते हैं। समाचारपत्र के बीच के पन्नों पर सम्पादकीय लिखा जाता है। यह लेख एक विचार को स्थापित करने का प्रयत्न करता और वहीं दूसरी ओर ज्वलंत मुद्दों के बारे में अपनी राय व्यक्त करता है ।

सम्पादकीय को समाचारपत्र की आत्मा भी कहा जाता है इसके बिना समाचारपत्र का प्रकाशन अधूरा है। एक विद्वान के अनुसार 'सम्पादकीय संक्षेप में तथ्यों और विचारों का ऐसा तर्कसंगत और सुरुचिपूर्ण प्रस्तवन है जिसका उद्देश्य मनोरंजन, विचारों को प्रभावित करना या किसी महत्त्वपूर्ण समाचार का ऐसा भाष्य प्रस्तुत करना है जिससे सामान्य पाठक उसका महत्त्व समझ सके।' सम्पादकीय न सिर्फ अपनी ओर से विचार व्यक्त करता है अपितु वह पाठकों की आवाज भी बनकर सामने आता है। पाठकों के मन मस्तिष्क को झकझोर देने वाली लेखनी से ऐसी कला का प्रदर्शन करता है कि पाठक को ऐसा प्रतीत होता है मानो यह उसकी ही आवाज हो। ऐसा करना दुष्कर कार्य है क्यों कि सम्पादक को लाखों पाठकों की सोच को समझने की आवश्यकता होती है तथा उनके विचारों में सन्तुलन बनाने की भी आवश्यकता होती है ताकि प्रत्येक पाठक के लिए वह पठनीय बन सके।

सम्पादकीय लेखन स्वतंत्र विधा है, इसे किसी नियम अथवा सिद्धान्त में बाँधा नहीं जा सकता है। प्रत्येक सम्पादक का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व होता है और उसकी अपनी शैली भी। वस्तुनिष्ठता, निर्भीकता, दूरदर्शिता, मार्गदर्शन, विचारोत्तेजना, सुझाव, आलोचना, तार्किकता, निष्पक्षता, प्रशंसा, उत्साहवर्धन, भावुकता, बौद्धिकता, सुसंगतता, पूर्णता, सकारणता और निर्लिप्तता सम्पादकीय लेखन के प्रमुख लक्षण हैं। पत्रकारिता के पुरोधा पुलित्जर सदैव तीन बातों पर विशेष बल देते थे – संक्षेप, सीधापन और शैली । अतः सम्पादकीय संक्षिप्त हों अन्यथा लम्बे और विस्तृत लेखन से वह नीरस और उबाऊ बन जाता है और पाठक उसे पढ़ने में रुचि नहीं दर्शाता। इसी प्रकार विषय में सीधापन और भाषा शैली भी वैसी हो कि पाठक को तुरंत समझ में आ जाए कि सम्पादकीय लेख का मूल भाव क्या है।

सम्पादकीय लेखन का कार्य दो रूप में किया जाता है। एक तो वह जो स्वयं कहना चाहता है और दूसरा कैसे और किस रूप में कहना चाहता है। यदि विचारों में संप्रेषणीयता नहीं है तो वह सम्पादकीय निरर्थक और बेकार हो जाएगा। संपादकीय लेखन कार्य से पूर्व संपादक को विशद ज्ञान की आवश्यकता है। उसे प्रत्येक विषय पर गहरी पकड़ होनी चाहिए तथा उसके पक्ष और विपक्ष में तर्क करने की क्षमता भी होनी चाहिए। सम्पादक को प्रतिदिन अनेक मुद्दों पर मंथन करने के अलावा उससे संदर्भित सामग्री का व्यापक अध्ययन करने की आवश्यकता होती है। प्रशासनिक, अन्तरराष्ट्रीय, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, न्यायिक मसलों पर गहरी पैठ होने के साथ–साथ लेखन के समय आम जन की भावनाओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। ऐसा न करने पर पाठक अथवा पाठकों के समूह की भावनाएँ आहत हो सकती हैं । भारत के बजट पर लिखने से पूर्व देश की आर्थिक स्थिति और उसके अर्थशास्त्र का ज्ञान होना जरूरी है तो विदेश मामलों पर लिखने से पूर्व आपसी संबंधों और देश की नीति के बारे में भलि–भाँति अवगत होना आवश्यक है। संक्षिप्त में यदि यह कहा जाए कि संपादक को सभी क्षेत्रों के विषयों के ज्ञान के साथ–साथ पाठकों अभिरुचि और उनकी जिज्ञासा वृत्ति का मूल्यांकन करने की क्षमता होनी चाहिए।

सम्पादकीय लेखन को भी दो भागों – सूचनात्मक और बहस के रूप में विभाजित किया जा सकता है । सूचनात्मक सम्पादकीय में समस्या का वर्णन और विश्लेषण किया जाता है। सामान्यतः भूकम्प, बाढ, गर्मी, अकाल आदि समस्याओं को पाठकों के बीच प्रस्तुत कर उस विपदा के प्रति सचेत करने के साथ साथ राहत हेतु प्रेरित करना उद्देश्य होता है। ऐसे सम्पादकीय आलेखों में कर्त्तव्य बोध का अहसास होता है। बहस वाले सम्पादकीय प्रायः किसी मुद्दे विशेष पर अपना पक्ष अथवा विरोध किसी एक विचार को प्रतिष्ठापित कर पाठकों के बीच वैचारिक बहस छेड़ना एक उद्देश्य होता है।

यदि सम्पादकीय लेखन की प्रक्रिया का क्रम तय करना होता निम्न रूप में किया जा सकता

है –

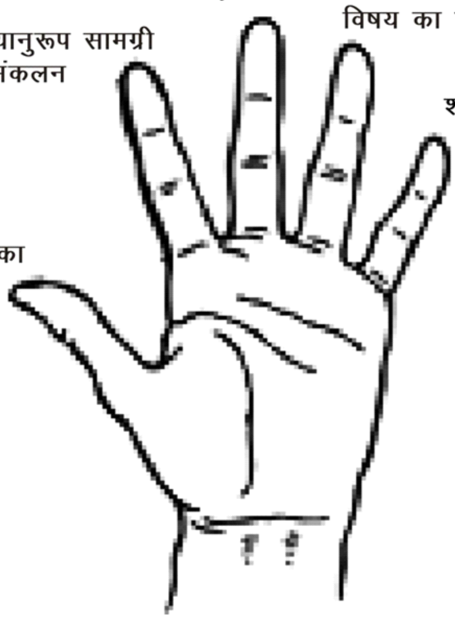

1– विषय का चयन : सम्पादकीय लेखन के लिए सबसे पहले विषय का चयन करना आवश्यक होता है। विषय चुनने में सामयिकता पहली कसौटी है। ज्वलंत और ताजा मुद्दों पर ही सम्पादकीय लेखन किया जा सकता है। अतः ऐसे विषय का चयन करना चाहिए जो कि समयानुसार महत्त्वपूर्ण और रुचिकर हो। विषय चयन में उस दिन की समस्त घटनाओं पर दृष्टिपात करने के उपरांत उस विषय पर अपना मत निर्धारण किया जाता है। सम्पादकीय लेखन के विषय चयन में प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय मुद्दे हो सकते हैं। विषय चयन में समाचारपत्र के प्रकाशन स्थल और प्रसार क्षेत्र के अलावा पाठकों को भी दृष्टि में रखा जाता है।

2– विषयानुरूप सामग्री का संकलन : विषय निर्धारण के उपरांत आवश्यकता होती है सामग्री के संकलन की। यद्यपि सम्पादक से अपेक्षा की जाती है कि वह दैनन्दिन घटनाओं पर अपनी पैनी नजर रखे ताकि किसी भी प्रकार की प्रगति से अछूता न रह जाए अन्यथा सम्पादकीय लेख में उसकी अज्ञानता प्रगट होने का खतरा रहता है। इसके उपरान्त भी पुस्तकालय में रखे संदर्भ ग्रंथों, समाचारपत्र की कतरनों, इंटरनेट पर उपलब्ध साहित्य का संकलन का अवलोकन करने के उपरांत सम्पादक अपनी लेखन प्रक्रिया आरंभ करता है।

3– विषय प्रवेश एवं विस्तार : सम्पादकीय लेख का आरंभ का हिस्सा ही विषय प्रवेश को दर्शाता है। इसमें विषय की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है तथा सुसंगत रूप में प्रस्तुतीकरण किया जाता है ताकि उसकी पठनीयता बनाई रखी जा सके। विस्तार करते समय विषय को भली–भाँति समझा देने के बाद अपने विचारों तथा तर्कों का प्रस्तुतीकरण करता है ताकि पाठक भी विषय पर अपनी राय के साथ तर्क करने लगे। अच्छे सम्पादक के लिए यह आवश्यक है कि अपने विचारों के प्रतिपादन से पाठक में

वैचारिक संघर्ष पैदा कर दे और वह नए चिन्तन को ओर अग्रसित हो।

4– विषय का निष्कर्ष : सम्पादकीय लेखन का अंतिम भाग में सम्पादक अपनी ओर से विषय, घटना अथवा किसी मुद्दे पर अपना विचार निष्कर्ष रूप में व्यक्त करता है। निष्कर्ष पाठक के मस्तिष्क को झकझोर देने वाला होता है। कई बार सम्पादक अपनी ओर से निष्कर्ष के साथ ही एक बहस को भी जन्म देता है जो पाठकों के बीच बनी रहती है ।

5– शीर्षक : सम्पूर्ण लेखन के उपरांत सम्पादक को अपने लेख के शीर्षक का निर्धारण करना होता है। शीर्षक ही सम्पूर्ण लेखन की जान होता है क्यों कि पाठक का ध्यान आकर्षित करने के लिए सर्वप्रथम शीर्षक ही कारगर साबित होता है।

7.7 संपादक के नाम पत्र

समाचारपत्र में प्रकाशित समस्त सामग्री लाखों पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होती है। यह आवश्यक नहीं कि समाचारपत्र में प्रकाशित प्रत्येक सामग्री के प्रति पाठक का विचार सकारात्मक ही हो। कदाचित् वह किसी सामग्री विशेष से असन्तुष्ट भी हो सकता है। कुशल पत्रकार पाठकों की मनोभावना का आंकलन करने के उपरांत ही प्रकाशन कार्य करता है तथापि प्रत्येक पाठक की मनःस्थिति का मूल्यांकन कर पाना अतिदुष्कर कार्य है। ऐसी स्थिति में पाठक अपनी प्रतिक्रिया समाचारपत्र को अपने पत्र के माध्यम से करता है और इसे ही सम्पादक के नाम पत्र से परिभाषित किया जाता है। सामान्यतः यह सम्पादकीय पृष्ठ पर ही प्रकाशित किया जाता है।

सम्पादक के नाम पत्रों में शिकायती पत्र, सम्पादकीय दृष्टिकोण को लेकर मत व्यक्त करने वाले पत्र, सरकारी नीति को लेकर अभिप्राय व्यक्त करने वाले पत्र, राजनीतिक दलों के बारे में पाठकों के विचार, समाज में फैल रही कुरीतियों के संबंध में अथवा किसी विषय विशेष पर स्पष्टीकरण संबंधी पत्रों को इस श्रेणी में लिया जा सकता है।

इस प्रकार के पत्रों में बिजली का बार–बार जाना, मोहल्ले में गंदगी का होना, किसी भुगतान में देरी, स्थानान्तरण में पक्षपात, पानी के वितरण की समस्या, मोहल्ले में समाज कंटकों के आतंक आदि समस्याओं को लेकर लिखे गए पत्रों के माध्यम से प्रशासन का ध्यान आकर्षित करने की भावना निहित होती है। इसी प्रकार किसी विषय अथवा मुद्दे को लेकर सम्पादकीय दृष्टिकोण पर प्रतिक्रिया, सरकार की विभिन्न नीतियों जैसे आर्थिक, सामाजिक, विदेश नीतियों, भूमि आवंटन, शिक्षा नीति आदि विषयों के अलावा राजनैतिक दलों के कार्यक्रमों, आन्दोलनों, मांगों आदि पर प्रतिक्रिया, समाज में फैल रही कुरीतियों अथवा किसी विषय पर प्रकाशित समाचार अथवा लेख पर स्पष्टीकरण आदि विषयों का समायोजन संपादक के नाम पत्र के तहत किया जाता है।

सम्पादक के नाम पत्र लिखते समय विषय की उपयोगिता, प्रासंगिकता और सामयिकता का ध्यान रखा जाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्राप्त पत्र की सामग्री की सामयिकता प्रकाशन के लिए चुने जाने में विशेष रूप से सहायक होती है। पाठक की रुचि किसी भी सामयिक विषय पर की गई टिप्पणी अथवा प्रतिक्रिया में होती है न कि बहुत पुरानी अथवा विस्मृत विषयों पर दृष्टिकोण को जानने में। पत्रों के प्रकाशन के समय इस बात का भी विशेष ध्यान रखा जाता है कि पत्र में उल्लिखित जानकारी या सामग्री की उपादेयता क्या है ? यह आवश्यक नहीं कि संपादक प्राप्त पत्र की सामग्री से सहमत ही हो। वह पूर्णतः असहमत होते हुए भी उसे उपादेय देखकर प्रकाशित करने का निर्णय ले सकता है।

अनेक पत्र समाचार पत्रों मे प्रकाशित प्रसंगों के सम्बन्ध में होते हैं, चालू प्रसंग के कारण इनकी उपयोगिता विशेष हो जाती है। प्रसंग पर भी विशेष प्रकाश डालने में वे सहायक होते हैं। अतः पत्र सामग्री की प्रांसगिकता भी उसे प्रकाशनीय ठहराने के लिए एक उचित मानक है। आलोचनात्मक पत्र विशेष रूप से प्रकाशनीय होते हैं। भले ही उनकी आलोचना का विषय संपादकीय नीति ही क्यों न हो। हाँ, यह देखना आवश्यक और उचित है कि आलोचना विषयपरक हो व्यक्तिपरक न हो। प्रकाशन योग्य चुने जाने वाले प्रत्येक पत्र के चुनाव का कोई औचित्य होता है। अतः संपादक प्रत्येक पत्र के सम्बन्ध में उसके प्रकाशन के औचित्य का मूल्यांकन करता है तभी जाकर ऐसे पत्रों का चयन प्रकाशन हेतु किया जाता है।

यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक पत्र प्रकाशन योग्य हो भले ही वह कितना ही रुचिकर क्यों न हो। यदि पत्र की सामग्री किसी व्यक्ति के प्रति दुष्प्रचार अथवा लांछन लगाने वाली है तो वह प्रकाशन योग्य नहीं माना जा सकता। ठीक इसी प्रकार ऐसे पत्र जिनका विषय किसी ऐसे मामले से संबंध रखता हो जो कि न्यायालय में विचाराधीन है अथवा किसी न्यायाधीश के फैसले की आलोचना से जुड़ी है तो भी उसे प्रकाशित नहीं किया जा सकता क्योंकि ऐसा करना दण्डनीय अपराध की श्रेणी में आता है।

7.8 सारांश :

पत्रकारिता मे फीचर अथवा रूपक का आशय ऐसे लेखों से है जो जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण जगाते हैं। घटनाओं और विषयों की जानकारी देते हैं, मनोरंजन करते हैं और ज्ञान भी बढ़ाते हैं। फीचर समाचारों को नया आयाम देते हैं। उन्हें नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हैं। फीचर किसी न किसी सामाजिक विषय अथवा मानवीय भावना आदि के इर्द गिर्द घूमता रहता है और समाचार से अलग पाठक, श्रोता या दर्शक को किसी मानवीय संवेदना से जोड़ता है। इसलिए फीचर की संरचना में तीन उद्देश्यों का ध्यान रखा जाना चाहिए कि फीचर मार्गदर्शक हो, ज्ञानवर्धक हो और मनोरंजक हो। फीचर का शीर्षक आकर्षक और नाटकीय होना चाहिए। इसी तरह फीचर की संरचना में इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि आमुख अथवा प्रस्तावना कलात्मक और उत्सुकता पैदा करने वाली हो।

शब्दावली – असंतुष्ट – असहमत
निर्लिप्तता – बिना किसी पक्ष के / भेदभाव के
पठनीयता – पढ़ने योग्य
कुरीतियाँ – अनुचित रीतियाँ / पद्धतियाँ

अभ्यास प्रश्न–

1– समाचार और फीचर में क्या प्रमुख अन्तर है ?
2– फीचर को मुख्यतः कितनी श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है ?
3– फोटो फीचर क्या है ?
4– व्यक्तिपरक फीचर से क्या आशय है ?
5– प्रिंटिग टेक्नोलॉजी के विकास ने फीचर को किस प्रकार प्रभावित किया है ?
6– फीचर लेखन के लिए किन बातों का ध्यान रखा जाता है ?
7– डिजिटल फोटोग्राफी ने पत्रकारिता में तस्वीरों के महत्त्व को किस तरह प्रभावित किया है ?
8– लेख व फीचर की शैली में क्या अन्तर है ?

9– लेख और फीचर का उद्देश्य क्या है ?
10– रेडियो फीचर क्या है ?
11– रेडियो फीचर की क्या विशेषता है ?
12– टेलीविजन फीचर अधिक प्रभावशाली क्यों होते हैं ?